DOI-10.53571/NJESR.2022.4.9.1-5

अध्यापक शिक्षा में मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्व

डॉ० अरुण कुमार दुबे
प्राचार्य
रामकृष्ण विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बगोदर, गिरिडीह, झारखंड

(Received:11August 2022/ Revised:20 August 2022/ Accepted: 25 September 2022/Published 30 September 2022)

प्रस्तुत आलेख में लेखक ने अध्यापक शिक्षा में मूल्यांकन को रेखांकित करते हुए मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला है।

अध्यापक शिक्षा के माध्यम से अध्यन–अध्यापन के विविध तत्वों की जानकारी प्राप्त की जाती है। अध्यापक का कार्य अध्यापन के साथ ही अधिगम प्रतिफलों का आकलन मूल्यांकन करना होता है।

मूल्यांकन का शाब्दिक अर्थ मूल्य का अंकन करना है। मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। हम जीवन में जन्म से मृत्यु तक किसी ना किसी रूप में मूल्यांकन करते रहते हैं। यदि मानव जीवन से मूल्यांकन का लोप हो जाए तो जीवन का उद्देश्य ही समाप्त हो जाएगा। मनोविज्ञान और शिक्षा में भी मूल्यांकन के अभाव में किसी भी प्रकार का विकास संभव नहीं है। मूल्यांकन के आधार पर वैध एवं विश्वसनीय ढंग से प्राप्त जो परिणाम सामने आता है, उसके आधार पर पूर्वकथन करना एवं शैक्षिक मार्गदर्शन करना संभव हो पाता है। मूल्यांकन के अभाव में निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं का व्यवहारिक उपयोग संभव नहीं हो सकता है और न ही पूर्व कथन एवं भविष्यवाणी आदि भी करना भी संभव हो पाता है। अध्यापकगण मूल्यांकन के द्वारा ही पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, पाठ योजना, शिक्षण सामग्री आदि की प्रभावशीलता जानते हैं तथा समय–समय पर आवश्यक संशोधन करते हैं।

मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जो यह बताती है कि वांछित उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया जा चुका है। सतत एवं व्यवस्थित रूप से चलने वाली मूल्यांकन की यह प्रक्रिया तीन बातों पर मुख्य रुप से ध्यान देती है–

- निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है।
- दिए गए अधिगम अनुभव कितने प्रभावशाली रहे।
- शिक्षा के उद्देश्य कितने अच्छे ढंग से पूर्ण हो रहे हैं।

मूल्यांकन का यह प्रत्यय इस मान्यता पर आधारित है कि शिक्षा संस्था का कार्य छात्रों के अधिगम में सहायता करना है। इसके लिए विभिन्न शिक्षण साधनों तथा उपायों को अपनाती है जिससे छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन होता है। व्यवहार में परिवर्तन आना ही उद्देश्यों की प्राप्ति का धोतक है।

अतः मूल्यांकन प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग–

- शिक्षण उद्देश्य
- अधिगम क्रियाएं तथा
- व्यवहार परिवर्तन है जो परस्पर निर्भर हैं।

शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अधिगम क्रियाएं आयोजित की जाती है जिनसे छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन होते हैं। छात्रों के व्यवहार में आए इन परिवर्तनों की तुलना शिक्षा उद्देश्यों से करके मूल्यांकन किया जाता है।

मूल्यांकन प्रक्रिया के अंतर्गत सर्वप्रथम सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है तत्पश्चात अधिगम क्रियाओं का आयोजन किया जाता है इसके अंतर्गत शिक्षण बिंदुओं का चयन एवं उपयुक्त अधिगम क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। अंततः व्यवहार परिवर्तन को ज्ञात कर तथा पृष्ठपोषण कर मूल्यांकन किया जाता है।

अध्यापक को चाहिए कि वह कक्षा के अंदर ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करे जिससे कक्षा का वातावरण एक उद्दीपक का कार्य करे।

अध्यापक को निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

- क्या ये अनुभव छात्रों की परिपक्वता के अनुकूल है?
- क्या ये अनुभव छात्र के व्यवहार का अंग बन सकते हैं?
- क्या ये अनुभव छात्र के लिए सार्थक तथा संतोषप्रद हैं?
- क्या ये अनुभव पर्याप्त हैं?

छात्र का व्यवहार उसके अस्तित्व के कई पक्षों से संबंधित होता है। इसके अंतर्गत बाह्य तथा आंतरिक दोनों ही प्रकार के व्यवहार आते हैं।

मूल्यांकन शिक्षा के सुधार तथा गुणात्मक उन्नयन में सहायक होता है। अध्यापकों के साथ छात्रों, अभिभावकों, प्रशासकों तथा समाज के लिए भी मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। छात्रों को अपनी शैक्षिक प्रगति का ज्ञान होता है फलस्वरुप उनमें प्रेरणा, आत्मसंतोष, आत्मविश्वास उत्पन्न होती है तथा कमियों की जानकारी भी मिल जाती है जो भविष्य में सुधार तथा परिश्रम करने की प्रेरणा देती है। अध्यापकगण पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि, पाठ–योजना, शिक्षण–सामग्री आदि की प्रभावशीलता जानते हैं तथा समय–समय पर आवश्यक संशोधन करते हैं। अभिभावक अपने बच्चों की प्रगति, उनकी रुचि, योग्यता, क्षमता, सामर्थ्य, कमियों आदि को पहचान कर उन्हें उचित मार्गनिर्देशन प्रदान करते हैं। शैक्षिक प्रशासक तथा नीति निर्धारक शैक्षिक प्रशासन की व्यवस्था तथा नीति निर्धारण करते हैं।

मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्त्व को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है–

- प्रत्यक्ष एवं स्थाई ज्ञान प्रदान करने के लिए।
- अधिगमकर्ता को स्वयं क्रियाशील बनाने तथा अभिप्रेरणा प्रदान करने के लिए।
- शिक्षा को समय–सापेक्ष परिवर्तन युक्त बनाने के लिए।
- शिक्षा के गुणात्मक एवं मात्रात्मक विकास के लिए।

- शिक्षा को वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान, अनुभव से संबंध स्थापित करने के लिए।
- पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों को नवीनता युक्त बनाने के लिए।
- शिक्षण की प्रभावशीलता इंगित करने के लिए।
- शिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट करने के लिए।
- शैक्षिक कार्यक्रमों की उपयोगिता का ज्ञान कराने के लिए।
- कक्षा शिक्षण में सुधार के लिए।
- छात्रों को शैक्षिक तथा व्यवसायिक निर्देशन देने के लिए।
- छात्रों की रूचियों, कुशलताओं, योग्यताओं, दृष्टिकोणों एवं व्यवहारों की जांच के लिए।
- उचित शैक्षिक निर्णय लेने के लिए।

निष्कर्ष :–

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी प्रक्रिया है। कोई बालक कितना जानता है? शिक्षक को अपनी कक्षा में कितनी सफलता मिलती है? शिक्षण–विधि क्या हो? शिक्षण को छात्रों के हित में किस प्रकार समायोजित करना है? आदि प्रश्नों का उत्तर मूल्यांकन द्वारा ही प्राप्त होता है। ज्ञानात्मक स्तर के बारे में जानकारी के साथ ही सफलता और विफलता, उपयुक्त अध्यापन–विधि, व्यूह रचना एवं प्रतिमान आदि के चयन में शिक्षण–अधिगम स्तर समायोजन, संप्रेषण अंतराल संबंधी सूचना आदि के बारे में यथार्थ का ज्ञान मूल्यांकन के माध्यम से ही कर पाना संभव हो पाता है। अध्यापकगण अपनी त्रुटियों एवं कठिनाइयों के बारे में जानकारी मूल्यांकन के द्वारा प्राप्त कर पाते हैं एवं सुधार हेतु निरंतर प्रयास करते हैं। अतः विविध स्तरीय प्रारुपों में सुधार हेतु मूल्यांकन अति आवश्यक है।

संदर्भ–सूची :–

- अन्वेशिका–इण्डियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, वाल्यूम 6, नवम्बर–जून 2009
- थर्नडाइक,इ॰एल॰ एण्ड हॉगेन, इ.पी. 1969 मेजरमेण्ट एण्ड इवैल्युएशन इन सायकॉलौजी एण्ड एजुकेशन न्यूयार्क : जॉन वीली एण्ड सन्स।
- नेशनल पॉलीसी ऑफ एजुकेशन, 1986, न्यू दिल्ली : मिनीस्ट्री ऑफ एच आर डी, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया।

अध्यापक शिक्षा मे मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्व

डा॰ अरूण कुमार दुबे
प्राचार्य
रामकृष्ण विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बगोदर, गिरिडीह,
झारखंड – 825322
E-mail : arunkumardubey69@gmail.com

प्रति हेतु पता :–
डा॰ अरूण कुमार दुबे
प्राचार्य
रामकृष्ण विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बगोदर
सरिया रोड बगोदर
पोस्ट–बगोदर थाना–बगोदर
जिला–गिरिडीह
राज्य–झारखंड
पिन–825322